RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

महात्मा गाँधी एवं दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का समाजकार्य दृष्टिकोण से विश्लेषण

सत्येन्द्र

सह आचार्य विभाग, समाजकार्य एवं समाजशास्त्र वनस्थली विद्यापीठ–(राज॰)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 25 May 2019

Keywords
सामाजिक विचारक, समाजकार्यण

ABSTRACT

भारतीय समाज के सामाजिक एवं राजनैतिक ढ़ाचें पर महान व्यक्तित्व का सदा प्रभाव रहा है चाहे मर्यादा पुरूष राम हो अथवा भगवान श्रीकृष्ण हो। भारतीय समाज में समकालीन दार्शनिकों से भी प्रभावित रहा जिसमें महात्मा गाँधी एवं दीनदयाल उपाध्याय जैसे महान व्यक्तित्व भी शामिल है। प्रस्तुत शोधपत्र में उनके विचारों का समाजकार्य दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है जिसमें अन्तर्वस्तु विश्लेषण के माध्यम से तथ्य को संकलित करते हुए विश्लेषण किया है, तथा शोध की गुणात्मक विधि का उपयोग किया गया है।

विश्व में सभी पीढ़ीयों के महान व्यक्ति की उन्नति के लिए सर्वदा ही चिन्तित रहे है। अविस्मरणीय काल ही सभी बडे–बड़े राजनीतिज्ञों एवं सामाजिक चिन्तकों के सम्मुख ''सामाजिक कल्याण' एक महत्वपूर्ण प्रश्न बनकर उन्हें उद्धेलित करता रहा है। मनुष्य को सामाजिक, राजनैतिक यहाँ तक की आध्यात्मिक कल्याण के लिए कार्य किए है। भौतिक उन्नति एवं नैतिक विकास दोनों ही 'सामाजिक कल्याण' पर अन्तर्निहित है।

भारतीय समाज भी ऐसे महान विभूतियों से अछूता नहीं रहा है जिसमें मर्यादा पुरूष राम, कृष्ण, महावीर बुद्ध, से लेकर राजाराम मोहनराय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द इत्यादि शामिल है। वहीं समकालानीन भारतीय राजनैतिक विचारकों में महात्मा गाँधी, बाल गंगाधर तिलक, दीनदयाल उपाध्याय इत्यादि शामिल है। जिनके सामाजिक चिंतन में भारतीयता के साथ–साथ प्रत्येक व्यक्ति का उदय कैसे हो इसको लेकर अति गंभीरता दिखाई दी।

प्रस्तुत शोध भारतीय समाज पर गहन छवि देने वाले दो महान दार्शनिकों के सामाजिक दृष्टिकोण को समाजकार्य के आधार पर मुख्य रूप से महात्मा गाँधी एवं दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का विश्लेषित किया गया है।

इसके लिए प्रस्तुत शोधपत्र हेतु निम्न साहित्य पुनरावलोकन किया गया है – शर्मा, जयनारायण (2009) ने अपनी पुस्तक ''इन समकलोपीड़िया ऑफ इमानिस्ट थिंकर'' में दीनदयाल उपाध्याय के जीवन गतिविधियां के साथ–साथ उनके राजनैतिक, सामाजिक विचारों को समाहित किया गया है। मिश्रा, विनोद ने अपनी पुस्तक ''एकात्मक मानववाद दर्शन, जिसमें उन्होंने व्यक्ति, व्यक्ति से परिवार से समाज एवं समाज से राष्ट्र के दर्शन पर जोर दिया गया। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का उदय हो और प्रत्येक व्यक्ति अपनी उन्नति कर सकें। वहीं मिश्रा एम.के. एवं दाधीच, कमल के द्वारा लिखित पुस्तक गाँधी एवं सर्वोदय में गाँधी के सर्वोदय की अवधारणा को प्रतिपादित किया है।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. दीनदयाल उपाध्याय एवं महात्मा गाँधी के सामाजिक विचारों का अध्ययन करना।
2. समाजकार्य दृष्टिकोण से गाँधी एवं उपाध्याय के विचारों का मूल्यांकन करना।

अध्ययन प्रविधि –

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए गुणात्मक विधि का उपयोग करते हुए विषयवस्तु विश्लेषण का प्रयोग कियपा गया है जो पूर्णतः द्वितीय तथ्यों पर आधारित है।

प्रस्तुत अध्ययन भारत के दो महान दार्शनिक महात्मा गाँधी एवं दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन का समाजकार्य दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया है।

समाजकार्य दृष्टिकोण –

भारत में समाजकार्य प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से आदि कारण हो रहा है। यदि हम रामायण एवं महाभारत जैसे महाग्रन्थों को अवलोकित करें तो अनेकों बार समाजकार्य से प्रतीक होता है। गीता ज्ञान में श्रीकृष्ण के द्वारा दिया गया ज्ञान भी समाजकार्य से सम्बन्धित है। वहीं स्वतन्त्रता से पूर्व अनेक विद्वानों, आचार्यों एवं गुरूओं के माध्यम से भी समाजकार्य किया गया। भारत में व्यावसायिक रूप से भी

RRIJM 2015, All Rights Reserved

स्वतन्त्रतापूर्वक ही मुम्बई में ''सर दोराबजी द्वारा ग्रेजुएट ऑफ सोशल वर्ग'' (1936) में स्थापना की गई।

वर्तमान में समाजकार्य, दान, दया, करूणा से बाहर आ चुका है। ऐसा हाल के समय (2014) में समाजकार्य व्यावसायिक परिभाषा पर प्रकाश डाला जाए तो प्रतीक होता है। ''समाजकार्य अभ्यास आधारित व्यवसाय है तथा जो अकादमिक रूप से सामाजिक परिवर्तन, एवं सामाजिक विकास, सशक्तिकरण तथा व्यक्तियों की स्वतन्त्रता को बढ़ावा देते हैं। समाज कार्य के मुख्य सिद्धान्तों में सामाजिक न्याय, मानवाधिकार, सामूहिक उत्तरदायित्व, विविधता का सम्मान समाज कार्य के केन्द्र में है। समाजकार्य सैद्धान्तिकी समाजकार्य, समाज विज्ञान, मानविकी तथा स्वदेशी ज्ञान के माध्यम व्यक्तियों की भलाई का कार्य करते हैं।''

उपर्युक्त परिभाषा वैश्विक रूप से स्वीकार किया गया है। उपर्युक्त परिभाषा को यदि विश्लेषित किया जाए तो मुख्य रूप से समाज में उपेक्षित वर्ग अथवा हाशिए पर खड़े लोगों के उत्थान के लिए कार्य करते हैं। जिसमें स्वदेशी ज्ञान अथवा स्थानीय देशों के पवित्र ग्रन्थों से उत्थान किया जाना चाहिए।

वहीं गाँधी जी के 'सर्वोदय' में सभी व्यक्तियों के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक समानता पर जोर देता है जो कि व्यक्ति के मानवाअधिकारों से सम्बन्धित है। जिसमें समाज के प्रत्येक व्यक्ति की भलाई हो सके और उनका उत्थान किया जा सके।[1]

समाजकार्य व्यवसाय भी व्यक्ति की गरिमा, उसके मानवाधिकार, उसकी विविधता एवं स्वदेशी ज्ञान का उपयोग करते है। जो कि गाँधी जी के सर्वोदय के सिद्धान्त के साथ–साथ स्वदेशी आन्दोलन से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित है।

इसी प्रकार दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन पर प्रकाश डाला जाए उनके प्रमुख सिद्धान्त 'एकात्मक मानवतावाद था। जिसमें व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं वैश्विक स्तर पर मानव भलाई को श्रेणीबद्ध किया है।

समाजकार्य भी प्रत्येक मानव की भलाई पर जोर देते है विशेष रूप से पिछड़े वर्ग पर। ''एकात्मक मानवतावाद'' में प्रत्येक वर्ग व्यक्ति, परिवार, समाज इत्यादि के उत्तरदायित्व को वर्णित किया गया है, वहीं पर समाजकार्य व्यवसाय भी सामूहिक उत्तरदायित्व के सिद्धान्त पर कार्य करता है।

परिणाम एवं चर्चा –

प्रस्तुत शोधपत्र के समाजकार्य दृष्टिकोण से मूल्यांकित करने पर यह स्पष्ट होता है कि उपर्युक्त दोनों दार्शनिकों के विचारों वर्तमान समाजकार्य व्यवसाय से गहन सम्बन्ध रखते है। जहाँ सर्वोदय की अवधारणा समाजकार्य व्यवसाय में प्रत्यक्ष रूप से सम्बद्ध रखता है। समाजकार्य के सिद्धान्त में स्वीकृति का सिद्धान्त इस तथ्य की पुष्टि करता है कि व्यक्ति किसी भी जाति, धर्म, व्यवसाय, से सम्बन्ध रखता हो उसे बिना किसी भेदभाव के स्वीकार करना चाहिए। सर्वोदय सिद्धान्त में भी यह वर्णित करता है किसी भी व्यक्ति को उसके पद के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए। वकील एवं नाई दोनों को समान समझा जाना चाहिए। अतः समाज कार्य दृष्टिकोण से गाँधी के विचार विशेष रूप से सर्वोदय स्पष्ट रूप से समाज कार्य से सम्बद्ध रखता है।

शोधपत्र में दीनदयाल उपाध्याय के सैद्धान्तिक विचारों को भी समाजकार्य दृष्टिकोण से मूल्यांकित किया गया है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति जो समाज की सबसे छोटी ईकाई के रूप में व्यवस्थित है। जिससे समाज कार्य की परिस्थितिकी सैद्धान्तिकी पर बिल्कुल स्पष्ट रूप से लागू होता है। व्यक्ति से राष्ट्र एवं विश्व के रूप में एक इकाई के रूप में कार्य करती है। वहीं एकात्मक मानवतावाद में दीनदयाल उपाध्याय के द्वारा स्पष्ट किया गया है।

अतः स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि समाज कार्य एवं गाँधी तथा दीनदयाल उपाध्याय के विचार पूर्णरूप से तथा दोनों एक दूसरे गहरे सम्बन्ध है। समाज कार्य इस पर पूर्णतः निर्भर करता है।

संदर्भ सूची

1. मिश्रा, विनोद (2009) एकात्मक मानववाद दर्षन, दिल्ली संसार पब्लिकेषन
2. भारती, के.एस. द पोलटिकल थोट आफ दीनदयाल उपाध्याय दिल्ली नेषनल बुक
3. ट्रस्ट
4. सिंह सुरेन्द्र , समाजकार्य लखनउ, भारत पब्लिकेषन

RRIJM 2015, All Rights Reserved